आदि योगी

दूर उस, आकाश की, गहराइयों में,,,
इक नदी से, बह रहे हैं, आदि योगी l
शून्य सन्नाटे, टपकते जा रहे हैं,,,
मौन से, सब कह रहे हैं, आदि योगी l
योग के इस, स्पर्श से अब,
योगमय, करना है तन मन,,,

सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन l
उतरें मुझ में, आदि योगी l
योग धारा, छलक छन्न छन्न l
सांस शाश्वत, सनन सननन l
प्राण गुंजन, धनन धननन l
उतरें मुझ में, आदि योगी ll

पीस दो, अस्तित्व मेरा,
और कर दो, चूरा चूरा l
पूर्ण होने, दो मुझे और,
होने दो अब, पूरा पूरा l

भस्म वाली, रस्म कर दो, आदि योगी l
योग उत्सव, रंग भर दो, आदि योगी l
बज उठे ये, मन सितारी,

झनन, झननन, झनन, झननन l
"सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन" ll

उतरें मुझ में, आदि योगी l
योग धारा, छलक छन्न छन्न,
सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन l
उतरें मुझ में, आदि योगी ll
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

Source: https://www.bharattemples.com/aadi-yogi/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw